Behan Bhai Ghar Par Akele 1

Behan Bhai Ghar Par Akele

Indradhanush Ke Pichhe Pichhe
Chuninda Kahanian by Surinder Rampuri (चुनिंदा कहानियाँ : सुरिं ◌ंदर रामपुरी)
Dearest Amma
Parvarish Karen to Aise Karen
Kya Kare Pratham Varsh Mein : 1 se 12 mahine ke baccho ki dekhbaal ke tips
Bidhar
Pahalwan Saheb
रबीन्द्रनाथ टैगोर की 21 कहानियाँ (Rabindernath Tagore ki 21 Kahaniyan)
Is Upwan meiN
Shatakveer Sachin - (शतकवीर सचिन)
Channa
Bundelī lokagītoṃ kā sāṃskr̥tika adhyayana
Parents and Children
इहलोकतंत्र (भाग - 1: सत्याग्रह)
Notebook
Dear Maa " A Letter From My Heart"
SAKSHI HAI PEEPAL (साक्षी है पीपल)
एक मैं अकेला किसना
Oswaal One For All Question Bank NCERT & CBSE, Class-7 Hindi (For 2023 Exam)
अनुभव (एक कहानी संग्रह) : Anubhav (Ek Kahani Sangreh)
Ajane Melon Mein
Mitti Ki Gullak (मिट्टी की गुल्लक)
Rahi Akela
Somasī
LAL KITAB
Grihshobha Hindi
Bhartiya Shikhar Kathakosh : Nepali Kahaniyan Part I
The Siblings Slam Book
Career...a Turning Point
Saraswati Chhatrakosh
Stri Evam Samajik Prasang Mamta Kalia Katha Sahitya
PREMCHAND GHAR MEIN
THE DUSKY MOON (VOL-2)
Samajik Vighatan (in Hindi)
Kaviyoun Ke Bahane Vartman Par Bahas
Chinhaar
जीवन यात्रा
Jagran Sakhi February 2014
Mahakaushal Anchal Ki Lokkathyen

Behan Bhai Ghar Par Akele

Downloaded from hmg.creci-rj.gov.*by guest*

MATTEO JILLIAN

Indradhanush Ke Pichhe Pichhe New Saraswati House India Pvt Ltd

Rahi Akela

Chuninda Kahanian by Surinder Rampuri (चुनिंदा कहानियाँ : सुरिं ◌ंदर रामपुरी) Alekh Prakashan

अदम्य साहस के प्रतीक , युवा क्रांतिकारियों के प्रेरणास्रोत और महान स्वतंत्रता सेनानी भागवत राय जी का जन्म बलिया , उत्तरप्रदेश में हुआ था। भागवत राय जी विलक्षण प्रतिभा के धनी थे। उन्होनें अपनी युवावस्था में ही अनेक कीर्तिमान स्थापित कर अपनी अद्भुत , चमत्कारिक शक्तियों का परिचय दिया। इस पुस्तक में उनकी इन्हीं विलक्षण प्रतिभा से पाठक को अवगत कराया गया है। जब देश गुलाम था और देश में अनेकों कार्यों पर भारतीयों के लिए रोक लगी हुई थी , तब भागवत राय जी ने गुलाम देश में सर्कस कम्पनी खोलकर अंग्रेज़ों से लोहा लिया। इस उद्धरण का ज़िक्र डॉ . एस. मजूमदार की पुस्तक 'स्ट्राँग मैन ओवर द ईयर ' के एक चैप्टर में विस्तार पूर्वक किया है। पंडित द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी जी की इन पंक्तियों "उठो धरा के अमर सपूतों , पुनः नया निर्माण करो " से प्रेरित होकर उनकी 121वीं जयंती पर अपनी श्रद्धांजलि के रूप में दुनिया के सामने उनके व्यक्तित्व और कृतित्व को नये रूप और नये कलेवर में समाज के सामने प्रस्तुत करने का प्रयास कर रहा हूँ।

Dearest Amma वर्जिन साहित्यपीठ

मिट्टी की गुल्लक में समायी इक्कीस कहानियाँ इर्द -गिर्द घूमती हैं , एक बच्ची के , जिसका नाम मुन्नी है। ये कहानियाँ आरंभ होती हैं घर में एक लड़की के जन्म से उपजी निराशा से और फिर उसी मुन्नी का गाँव से शहर आ अपनी पढ़ाई से खुद को शशक्त बनाना। इन कहानियों की नायिका मुन्नी में छटपटाहट है, अपने आप को सबसे आगे रखने की चाहे इसके लिए कितना बड़ा भी झूठ बोलना पड़े। एक कहानी सायरा दीदी में तो अपने मित्रें के बीच अपना सिक्का जमाने के लिए वो ये तक कहती है कि सायरा बानो उसके बुआ की बेटी है जो एक बाल मन की सरलता को भी प्रदर्शित करता है। इस मुन्नी के जो हीरो हैं वो हैं उसके बाबूजी , जिनकी छत्रछाया में वो कुछ भी कर सकती है। कई बाल -सुलभ शैतानियां और कई छोटे - छोटे सपने हैं जो उस दशक की हर महिला ने जिए हैं। खास सादे अंदाज में कहे गए इन किस्सों में कहीं कड़वाहट या विद्वेष नहीं है। बेवजह की चाशनी और वर्क भी नहीं चढ़ाये गए हैं। चीजें जैसी हैं , वैसी ही हाजिर हैं। बच्चों की दुनिया में उन दिनों जैसा होता था , उसी का चित्रण इस पुस्तक में है।

Parvarish Karen to Aise Karen Rajkamal Prakashan

Folk tales of Mahakoshal region, Madhya Pradesh, India.

Kya Kare Pratham Varsh Mein : 1 se 12 mahine ke baccho ki dekhbaal ke tips Rajkamal Prakashan

Benefits : • 100 % Updated for 2023-24 with latest Rationalised NCERT Textbooks • Crisp Revision with Concepts Review, Mind Maps & Mnemonics • Valuable Exam Insights with Fully Solved NCERT Textbook + Exemplar Questions • Extensive Practice with 1600 + Practice Questions & Activity Questions • NEP Compliance with Artificial intelligence & Art Integration

Bidhar Kitabghar Prakashan

Notebook is an anthology crafted by 37 writers and compiled by Shruti Singh and Rilesh Sarkar. Both the compilers and authors have poured there heart out in writing each and every piece .

Pahalwan Saheb Atlantic Publishers & Dist

आप पंछियों को रोज उड़ते देखते हैं न ! आकाश में कबूतर; चील; बाज; गौरैया ; फाख्ता ; कौवा; कोयल; तोता ; सारस—न जाने कितने पंछी उड़ते हैं। क्या कभी कबूतर ने अपने बच्चों से यह कहा कि तुम चील की तरह उड़ो या बगुले ने अपने बच्चों को बाज की कलाबाजी करने को कहा ? क्या चील ने कहा कि सारस की तरह सीधी उड़ान भरो ? आकाश तो सबके लिए है न? तो फिर सब पंछी एक जैसी उड़ान क्यों नहीं भरते ? वजह—सबकी अपनी क्षमताएँ हैं। आकाश मिलने का मतलब यह नहीं कि सभी दूर गगन में निकल जाएँ। आप अभिभावक हैं तो आपको अपने बच्चों की क्षमता का अंदाजा होना चाहिए। उन पर अपने सपनों का आकाश मत थोपिए; बल्कि उनके सपनों को अपने विश्वास और साथ के पंख दीजिए। आप बच्चों का हौसला और मनोबल बढ़ाइए। उनकी कठिनाइयों को समझिए। दूसरे बच्चों से उनकी तुलना मत कीजिए। आप केवल यह प्रयास कीजिए कि आपके बच्चे गलत राह पर न जाएँ। गलती हो तो बताइए ; डाँटिए नहीं ; बल्कि भरोसा देते हुए प्यार से समझाइए। बच्चों के व्यवहार से उनके बारे में अंदाजा लगाया जा सकता है। इसके लिए जरूरी है कि आप उन्हें पूरा समय दें। केवल रुपए खर्च करके आप उनका जीवन नहीं बना सकते। रुपए बेशक कम दीजिए ; मगर समय पूरा दीजिए। आपके बच्चे आपके प्यार और विश्वास के भूखे हैं। उन्हें एहसास कराइए कि कुछ भी हो ; तुम्हारे पापा -मम्मा तुम्हारे साथ हैं। अपना भरोसा ; प्यार ; साथ और दोस्ती उन्हें भरपूर दीजिए। फिर देखिए ; बच्चे कैसे खिल जाएँगे।

रबीन्द्रनाथ टैगोर की 21 कहानियाँ (Rabindernath Tagore ki 21 Kahaniyan) Let's Write Publication

इस पुस्तक में उन परामर्शों को प्रोत्साहन दिया गया , जिन्हें माता -पिता तो पसंद करते हैं , परंतु विशेषज्ञ उन पर गौर तक नहीं करना चाहते। लेखिका हैइदी ने इस पुस्तक को लिखने का विचार रखा। जब वे अपनी पुत्री एम्मा को जन्म देने वाली थीं। उसके बाद से लेकर आगे तक , उनके जीवन में पुत्री के पालन-पोषण को लेकर जो भी समस्याएं आईं या उन्होंने जो भी समाधान तलाशे , उन सभी को इस पुस्तक में शामिल किया गया है। हैइदी और उनके दल ने विशेषज्ञों की सलाह के साथ -साथ माता-पिता के रूप में मिली अमूल्य जानकारी व अनुभव को भी अपनाया। उन्होंने स्तनपान के लाभ गिनाते हुए बताया कि जब तक बच्चा तैयार न हो , उसे ठोस आहार नहीं देना चाहिए। परंतु क्या उन्होंने बताया कि अगर बच्चे का नाम सरल हो और समय के दौर व राजनीति के अंधानुकरण से परे हो तो कितना ही अच्छा होगा ? उन्होंने बेबी डेली डजन वाले फूड की बात तो की , परंतु क्या यह भी बताया कि खाली बेबी फूड जार में बच्चे के लिए खाना गर्म हो सकता है। उन्होंने बच्चे को डॉक्टर की पूरी खुराक देने के बारे में तो बताया , किंतु क्या यह बताया कि उसी दवा को डॉक्टर की राय से हल्का ठंडा करके देने से उसकी कड़वाहट घटाई जा सकती है ...खैर आप पुस्तक में सब कुछ जान लेंगे। यह अपने -आप में एक अनूठी श्रेणी की पुस्तक है। कुछ लेखकों ने चिकित्सकीय सलाह अच्छी दी , परंतु विकासात्मक चरणों के बारे में नहीं बता सके। कुछ ने पोषण के बुनियादी नियमों से अधिक कुछ नहीं बताया। कुछ लोग विकास के चरणों की बात करते हैं , परंतु बच्चों के स्वास्थ्य तथा रोगों से बचाव के बारे में नहीं बता सकते। यह पुस्तक वह सब कुछ बताती है , जो कोई माता-पिता अपने नवजात को पालने के बारे में जानना चाहेगा। चाहे आप फार्मूला बनाएं या हाथ में गड़ी फांस निकालें , बच्चे की संकेत भाषा से जुड़े लाभों पर विचार करें या फिर बच्चे के किसी रोग की जानकारी लेना चाहें , यह पुस्तक आपकी मदद के लिए प्रस्तुत है। हो सकता है कि यह आपको सदा बिलकुल सटीक तथा विशेषज्ञों के स्रोतों से भरी जानकारी न दे सके , परंतु आधी रात को बीमार बच्चे की मदद के लिए उपाय तो दे ही सकती है।

Is Upwan meiN Diamond Pocket Books Pvt Ltd

Study of the cultural background of Bundeli folk-songs.

Shatakveer Sachin - (शतकवीर सचिन) Krishna Prakashan Media

Drawing book

Channa Vani Prakashan

'बिढार ' का मतलब है - अपने कंधे पर अपनी गृहस्थी का बोझ लादे हुए भटकना। इस दिक् -काल से परे की भटकन का मक़सद है, शायद, गौतम बुद्ध की तरह संबोधि प्राप्त करना। अपने आपको , अपनों को, अपनापे को पाना। बिढार के चांगदेव की यह भटकन , भाषा-प्रदेश और काल को लाँघकर सार्वजनीन और बीसवीं शताब्दी के डॉक्युमेन्ट्स को लेकर सार्वकालिक बन जाती है। यह कहीं भी ख़त्म न होनेवाली भटकन , जिसका प्रारम्भ 1962 में हुआ था , वह बिढार (1975), 'जरीला' (1977) और 'झूल' (1979) को पार कर अब अपने आगे के मुकाम 'हिन्दु ' की ओर अग्रसर है। यह परकाया प्रवेश करनेवाले एक की आपबीती है जो अपने विस्तार में अनेक को समाहित करने का सामर्थ्य रखती है। यह मानव -सभ्यता की कैसी विडम्बना है कि सृजन -क्षमता के विनाश को स्वीकार किए बिना मनुष्य को समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त नहीं होती। विपात्र बनो और प्रतिष्ठा प्राप्त करो। सत् (बिईंग) और कर्तृत्व (बिकमिंग) का घोर कुरुक्षेत्र नेमाडे जी के उपन्यास -चतुष्ट्य का दहला देनेवाला अंतःसूत्र है। जीवन के नैतिक और सांस्कृतिक दायित्व की व्यग्रता का भाव नेमाडे जी के 'बिढार ' में जिस अभिनिवेश शून्य परन्तु रचनात्मक स्वरूप में पाया जाता है , वह अन्यत्र दुर्लभ है। - रंगनाथ तिवारी

Bundelī lokagītoṃ kā sāṃskr̥tika adhyayana Bishara Publication

रबीन्द्रनाथ टैगोर (1861-1941) जब कभी भी भारतीय साहित्य के इतिहास की चर्चा होगी तो वह गुरुदेव रबीन्द्रनाथ टैगोर के नाम के बिना अधूरी ही रहेगी। भारतीय साहित्य गुरुदेव रबीन्द्रनाथ टैगोर के योगदान के लिए सदैव उनका ऋणी रहेगा। वे अकेले ऐसे भारतीय साहित्यकार हैं जिन्हें नोबेल पुरस्कार मिला है। वह नोबेल पुरस्कार पाने वाले प्रथम एशियाई और साहित्य में नोबेल पाने वाले पहले गैर यूरोपीय भी थे। वह दुनिया के अकेले ऐसे कवि हैं जिनकी रचनाएं दो देशों का राष्ट्रगान हैं - भारत का राष्ट्र -गान 'जन गण मन' और बाँग्लादेश का राष्ट्रीय गान 'आमार सोनार बाँग्ला ' रबीन्द्रनाथ टैगोर की ही रचनाएँ हैं। गुरुदेव एवं कविगुरु , रबीन्द्रनाथ टैगोर के उपनाम थे।

2

2 Behan Bhai Ghar Par Akele 2021-03-13

इन्हें रबीन्द्रनाथ ठाकुर के नाम से भी जाना जाता है। आठ साल की उम्र में उन्होंने पहली कविता
लिखी और तकरीबन 51 साल की उम्र में ‘गीताजंलि’ लिखकर दुनिया का सबसे बड़ा नोबेल पुरस्कार प्राप्त
किया। ‘गीतांजलि’ लोगों को इतनी पसंद आई कि बाद में इसका जर्मन, फ्रेंच, जापानी, रूसी आदि प्रमुख
भाषाओं में अनुवाद किया गया। एक महान कवि होने के साथ ही, वो एक मानवतावादी, देशभक्त, चित्रकार,
उपन्यासकार, कहानी लेखक, शिक्षाविद् और दर्शनशास्त्री भी थे। वो देश के सांस्कृतिक दूत थे
जिन्होंने पूरी दुनिया में भारतीय संस्कृति के ज्ञान को फैलाया है। वो अपने समय के एक प्रतिभासम्पन्न बच्चे थे जिसने बहुत महान कार्य किये। कविता लेखन के क्षेत्र में वो एक उगते सूरज के सामान थे। कविताओं या कहानी के रुप में अपने लेखन के माध्यम से लोगों के मानसिक और नैतिक भावना को अच्छे से प्रदर्शित किया। आज के लोगों के लिये भी उनका लेखन अग्रणी और क्रांतिकारी साबित हुआ है। जलियाँवाला बाग नरसंहार की त्रासदी के कारण वो बहुत दुःखी थे जिसमें जनरल डायर और उसके सैनिकों के द्वारा अमृतसर में 1919 में 13 अप्रैल को महिलाओं और बच्चों सहित बहुत सारे निर्दोष लोग मारे गये थे। वो एक महान कवि होने के साथ ही एक देशभक्त भी थे जो हमेशा जीवन की एकात्मकता और इसके भाव में भरोसा करता है। अपने पूरे लेखन के द्वारा प्यार, शांति और भाईचारे को बनाये रखने के साथ ही उनको एक रखने और लोगों को और पास लाने के लिये उन्होंने अपना सबसे बेहतर प्रयास किया। अपनी कविताओं और कहानियों के माध्यम से प्यार और सौहार्द के बारे में उन्होंने अच्छे से बताया था। टैगोर के पूरे जीवन ने एक दूसरे से प्यार और सौहार्द के स्पष्ट विचार को भी उपलब्ध कराया। लेखन में उनकी लगातार सफलता ने भारत के आध्यात्मिक विरासत की एक प्रसिद्ध आवाज बनने के लिये उनको काबिल बनाया। मनासी, सोनर तारी, गीतांजलि, गीतिमलया, बलाका आदि जैसे उनके कविताओं के कुछ अद्वितीय संस्करण हैं। कविताओं के अलावा, वो नृत्य नाटक, संगीत नाटक, निबंध, यात्रा वृतांत, आत्मकथा आदि लिखने के लिये भी प्रसिद्ध थे।
Parents and Children Delhi Press
Prastut pustak 'Lal Kitab' ko ek vishishth granth ke roop mein prastut kiya gaya hai. Ismein jyotish evam hasthrekha shastra ka mishran hai. Inn dono kalaaon ka nichodh ismein diya gaya hai. Ismein-1. Griho ke bure prabhav. 2. nakshatron ke bure prbhav. 3. maanglik dosh. 4. kaalsarp dosh tatha kundli dosh, ko dur karne ke upaaye vistaar mein samjhaaye gaye hain. Aise anek dosh jo manushya ki janam kundli mein paaye jaate hain jiske kaaran manushya ki pragati mein badhayein aati hain, durghatnayen hoti hain, aadi se bachne ke upaaye sujhaye gaye hain. Yeh ek atyant pathneeye pustak hai.
इहलोकतंत्र (भाग - 1: सत्याग्रह) ANUUGYA BOOKS
Dearest अम्मा was conceived and written by Ms. Vidushi Agarwal who is also the founder of Siyahi Vocals. This book is a dedication to her Late Grandmother, Mrs. Asha Agarwal. In this book, Vidushi has collected the best of memories and dedication for the grandmothers of the world. She aims to tell one and all that grandmothers should indeed live forever. Her grandmother passed away when she was in the 10th standard and since then, things haven't been the same for her. Such was their bond that Vidushi was the last person her grandmother saw before she attained eternal peace. We hope the book proved to be as special to you as all our co-authors.
Notebook THOUGHTS HYMN PUBLISHERS
“सचिन तेंदुलकर और क्रिकेट एक-दूसरे के पर्याय बन गए हैं। अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट में बनाए गए 99 शतकों और लगभग 31 हजार रनों ने उनके कद को बड़ा ही नहीं अपितु विशाल बना दिया है। अब वह महामहिम हो गए हैं। क्रिकेट जगत के इस महानायक ने क्रिकेट इतिहास के लगभग सारे रिकॉर्ड्स अपने नाम दर्ज करा लिए हैं और हर एक मैच में एक नया कीर्तिमान स्थापित करते जा रहे हैं।सचिन के क्रिकेट जीवन का विश्लेषण कर रहे वरिष्ठ पत्राकार राजशेखर मिश्र पिछले 27 सालों से सक्रिय पत्राकारिता से जुड़े हुए हैं। दैनिक जागरण, रविवार, संडे ऑब्जर्वर, स्वतंत्रा भारत, मशहूर टीवी प्रोग्राम रू-ब-रू और अमर उजाला से संबद्ध रहे श्री मिश्र इस वक्त आज समाज में एसोसिएट संपादक हैं। श्री मिश्र अब तक खेल तथा अन्य विषयों पर पंद्रह किताबें लिख चुके हैं।”

Dear Maa " A Letter From My Heart" BOOKSQUIRREL
मैंने अपनी पुस्तक में जीवन के हर पहलू, जीवन के हर रंग और जीवन के हर पराव को दिखलाया है। इस पुस्तक में आप सभी को समाज के कई रंग, समाज की धारणाएं से लेकर सामाजिक विषमताओं को समझने का अवसर प्राप्त होगा। इस पुस्तक में जीवन के उतार-चढ़ाव, खुशी-उमंग, दुख-पीड़ा सभी का समागम है। इस पुस्तक के जरिए मैंने अपनी बात आप सभी तक पहुंचाने का प्रयास किया है। मैंने अपनी कविता बहुत ही सरल भाषा में लिखने की कोशिश की है ताकि इसे हर उम्र के लोग और कम पढ़े-लिखे लोग भी पढ़ कर आसानी से इसके अर्थ को समझ सके। मैंने अपने जीवन में हुए अब तक के अनुभव के आधार पर कविताएं लिखी है और आशा करती हूं कि मेरी कविताएं आप सभी पाठकों के हृदय को जरूर छुएगी। मैं आप सभी पाठको से बताना चाहूंगी कि कोरोना काल में जहां एक तरफ सभी लोग डरे सहमे से घर में दुबके पड़े थे, वही मेरे अंदर की भावनाएं कविता बनकर मेरे मन मस्तिष्क में गोते लगा रही थी, तत्पश्चात मैंने अपनी कविता को आप सभी पाठकों तक पहुंचाने का निर्णय लिया और आज मेरे सपने साकार हो गए।
SAKSHI HAI PEEPAL (साक्षी है पीपल) ANUUGYA BOOKS
“तुम्हारे अंदर सहनशक्ति बहुत है।” “मैं जिन्न का बच्चा हूँ न।” मैं मुस्कराया। “तुम तो देवता हो। तुम्हारा जिगरा बहुत बड़ा है।” “क्या हो गया?” “अभी भी पूछते हो कि क्या हो गया। तुम तो सब कुछ जानते थे। सब कुछ समझते थे। पर कभी मुँह से नहीं बोला।” वह फिर रोने लगी। “मैं समझा नहीं।” वह रोते-रोते ही बोली, “ऐसा न कहो। आप तो ऐसा न कहो। पता नहीं अगली घड़ी रहूँ, न रहूँ।” “कुछ नहीं होता तुझे। तू ठीक हो जाएगी। बिल्कुल ठीक हो जाएगी। कितना बड़ा डॉक्टर तेरा इलाज कर रहा है। दवाई का हमने कभी नागा नहीं पड़ने दिया।” “मुझे चैन की मौत मर जाने दो। मेरे साँस आसानी से निकल जाएँगे। तुम सब कुछ जानते थे। जानते-बूझते भी अनजान बने रहे। चुप रहे। मेरी हर गलती बिसरा दी। अब भी मेरी कितनी सेवा करते हो, कितनी देखभाल करते हो।” “यह तो मेरा फर्ज़ है। तेरे बिना मेरा और है भी कौन।” वह कुछ देर चुप रही। ठंडा श्वांस भर मेरी गोदी में रखा हुआ अपना सिर हिलाया और आहिस्ता-आहिस्ता बोलने लगी, “ऐसा आदमी कब मिलता है। देवता पुरुष। लोग तो बिना बात से ही आरोप लगाते रहते हैं। औरत के चलने-फिरने पर ही शक किए जाते हैं।” मैं मुँह से कुछ न बोला। उसकी तरफ देखा। उसने मेरी आँखों में आए आँसू को देख लिया। ‘दीवारें’ कहानी से...
एक मैं अकेला किसना JEC PUBLICATION
इक्कीसवीं सदी की हिन्दी कविता वस्तु एवं संवेदना की दृष्टि से नब्बे दशक की कविता का विकास है। यह पुस्तक समकालीन दौर की सामाजिक यथार्थ प्रवण,जनवादी,प्रतिरोधी कविता को काव्य चर्चा के केंद्र में लाने का प्रयास हाकी। इसमे कवि विमर्श द्वारा जीवन और कविता का वर्तमान परिदृश्य प्रस्तुत किया गया है। वातर्मान बहुआयामी यथार्थ के परिवेश में विकस्वर नयी काव्य संवेदना,सामाजिक सरोकार,प्रतिबद्धता और प्रतिरोधी चेतना के मूल में कवि का जीवन राग ही प्रकट हुआ है।
Oswaal One For All Question Bank NCERT & CBSE, Class-7 Hindi (For 2023 Exam) K.K. Publications Sakhi is a premium women's magazine targeted to cater upwardly mobile women. Sakhi reader is modern in her outlook but at the same time retains her cultural values. Sakhi highlights the role of women in contemporary world and help them cope with the day-to-day lifestyle problems. The magazine targets the metropolitan youth as well where their fashion queries, psychological needs, career options, health issues, diet concerns are addressed. The fashion section of the magazine carries exclusive collection of renowned fashion designers showcased on top models and shot by famous photographs. The magazine also focuses on spirituality. There are regular columns on 'Dhyan', 'Yog' and 'Adhyatm' which includes sayings and thoughts of Zen Guru Osho, Dr Swami Ram, Swami Tejomayanand ji, Shri HanutShree and Shri Shri Ravi Shankar and many other spiritual gurus. That's not all! The magazine caters senior members of the family too. Their social, psychological, emotional and legal queries are resolved by our experts. The magazine is a complete package for one and all.
अनुभव (एक कहानी संग्रह) : Anubhav (Ek Kahani Sangreh) Nayee kitab Prakashan
Excerpts from the diary of an Indian cancer patient.